B. A. Third Year

First paper

Geographical Thought

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of geography

Harishchandra P. G. College Varanasi

आधुनिक युग का संस्थापक - कार्ल रिटर

"Founder of Modern Period" - Carl Ritter

कार्ल रिटर जर्मनी के विख्यात विद्वान थे एवं हम्बोल्ट के समकालीन थे।" कार्ल रिटर आयु में हम्बोल्ट से दस वर्ष छोटे थे क्योंकि वह 1779 में क्वेडलिनबर्ग (Quedlinburg) में एक चिकित्सक परिवार में पैदा हुए थे। परन्तु कार्लरिटर तथा हम्बोल्ट दोनों की मृत्यु 1859 में हुई थी। हम्बोल्ट की भाँति रिटर को भी आधुनिक भौगोलिकचिन्तन का संस्थापक माना जाता है। रिटर के पिता एक मामूली चिकित्सक थे। जब रिटर केवल पाँच वर्ष के थे तो उनके पिता की मृत्यु हो गयी, उसकी माता के पास पाँच सदस्यों के परिवार को आश्रय देने के लिए पर्याप्त आर्थिक साधन नहीं थे, सौभाग्य से उसे ~~स्नेपफेन्थल~~ (Schnepfenthal) स्थित साल्जमेन (Salzmann) के स्कूल में प्रवेश मिल गया। स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात उसने बेथमान होलवेज (Bethmann Hollweg) नामक धनी व्यक्ति के दो पुत्रों को पढ़ाने का कार्य शुरू किया। और बदले में उसने रिटर को विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता दी। विश्वविद्यालय स्तर पर उसने ग्रीक, लैटिन, इतिहास तथा भूगोल का गहन अध्ययन किया। वह अपने दोनों शिष्यों के साथ कई बार ~~फ्रैंकफुर्ट~~ (Frankfurt) गया, जहाँ उसने अपने शिष्यों में क्षेत्रीय अध्ययन के संबंध में रुचि पैदा की। बाद में वह स्विट्जरलैण्ड तथा इटली गया जहाँ उसने भौतिक तथा सांस्कृतिक दृश्यावली का अध्ययन किया। 1807 में रिटर के भेंट हम्बोल्ट से हुई जिसके परिणाम स्वरूप भूगोल में उसकी रुचि और भी बढ़ गयी। 1814 में रिटर ने गाटिंगन (Gottingen) विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और भूगोल, इतिहास, शिक्षाशास्त्र, भौतिकी, रसायन, खनिज विज्ञान, तथा वनस्पति शास्त्र में शिक्षा प्राप्त की।

गाटिंगन विश्वविद्यालय में रहकर ही उसने 1817 में अर्डकुण्डे (Erd Kunde) नामक ग्रन्थ का पहला खण्ड प्रकाशित कराया। इसमें अफ्रीका का वर्णन किया गया था। 1818 में उसने अर्डकुण्डे का दूसरा खण्ड प्रकाशित किया जो एशिया के वृतान्त से संबंधित था। इन दो खण्डों के प्रकाशन से रिटर की ख्याति बहुत बढ़ गयी और वह भूगोल का ऐसा लुधारक माना गया जिसने भूगोल को विज्ञान का दर्जा दिलाया, जिसके परिणाम स्वरूप रिटर को 1819 में ~~फ्रैंकफुर्ट विश्वविद्यालय~~ में इतिहास के प्रोफेसर पद पर नियुक्त किया गया। एक वर्ष तक ~~फ्रैंकफुर्ट~~ में रहने के पश्चात वह 1820 में बर्लिन विश्वविद्यालय में भूगोल का पहला प्रोफेसर बना और 1859 में अपनी मृत्यु तक वह इसी पद पर रहकर अध्यापन कार्य करता रहा। उसने बर्लिन भौगोलिक समिति (Berlin Geographical Society) की स्थापना की, जिसके द्वारा भौगोलिक पत्रिका का प्रकाशन उसके जीवन काल तक निरन्तर होता रहा।

कार्ल रिटर के ग्रन्थ - रिटर ने अपने अध्ययन तथा अध्यापन काल में कई ग्रन्थ लिखे तथा विभिन्न शोधालेखों की रचना की, जिनमें से मुख्य ग्रन्थों का नाम इसप्रकार है। (अर्डकुण्डे एवं लैण्डरकुण्डे) (Erd Kunde - Lander Kunde)

वर्ष	'ग्रन्थ का नाम'
1804	यूरोप का भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांख्यिकीय चित्रण (Europe - A Geographical, Historical and Statistical Painting)
1806	यूरोप की मानचित्रावली (Atlas) - छः मानचित्र)
1807	यूरोप के भूगोल का दूसरा खण्ड
1811	विधितन्त्र पर कई शोधपत्रों का प्रकाशन
1817	अर्डकुण्डे का प्रथम खण्ड
1818	अर्डकुण्डे का द्वितीय खण्ड
1822	अर्डकुण्डे के प्रथम खण्ड का द्वितीय संस्करण
1832	अर्डकुण्डे के द्वितीय खण्ड का द्वितीय संस्करण
1832-1838	अर्डकुण्डे के छः खण्ड (तीसरे से आठवें तक)
1842	न्यूजीलैण्ड के औपनिवेशीकरण (The Colonization of New Zealand) पर एक लेख।
1838-1859	अर्डकुण्डे के ग्यारह खण्ड (नौवें से उन्नीसवें तक)

अर्डकुण्डे (Erd Kunde) - रिटर ने भूगोल को 'अर्डकुण्डे' अर्थात भू-विज्ञान माना था। यह जर्मन शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ पृथ्वी का विज्ञान है। 1817 से 1859 के मध्य सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'अर्डकुण्डे' की रचना की जिसे वह जीवन-पर्यन्त लिखता रहा। इसके 19 अंकों का प्रकाशन लगभग 20,000 पृष्ठों में कराया। इस शब्द के प्रयोग के द्वारा उसने भूगोल को एक मौलिक विषय के रूप में स्थापित किया। उसने कहा कि भूगोल पृथ्वी का विज्ञान है। जिसे प्रकृति एवं इतिहास के सन्दर्भ में देखा जाता है।

रिटर की विचार धारा - (Concept) रिटर ने अपने ग्रन्थों में अपनी विचारधारा को स्पष्ट किया और अपने दर्शन से विज्ञान तथा भूगोल को एक नई दिशा दी। उसकी विचार धारा के मुख्य अंशों को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

1- मानव एवं प्रकृति - रिटर की मान्यता थी कि पृथ्वी एवं इसके निवासियों के मध्य गहरा सम्बन्ध है और एक का वर्णन दूसरे के बिना नहीं किया जा सकता है। उसने मानव को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति बताया मानव सभी भौगोलिक तत्वों में सबसे श्रेष्ठ तत्व है। इसी कारण भूगोल मानव केन्द्रित विषय है। "इतिहास एवं भूगोल एक दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते। पृथ्वी अपने निवासियों को प्रभावित करती है और इसके बदले में निवासी भूतल को परिवर्तित करते हैं।" (प्रकृति की एकता)

(II) नया वैज्ञानिक भूगोल – रिटर परम्परागत भूगोल के अध्ययन में विश्वास नहीं करते जिसमें केवल देशों तथा नगरों के संबंध में तथ्य दिये गये हों और उनमें वैज्ञानिक विसंगतियाँ हों। उसका वैज्ञानिक भूगोल पार्थिव तथा स्थानिक एकता (Terrestrial and spatial unity) पर आधारित था। उसने पृथ्वी तल पर विभिन्न तत्वों की विविधता में एकता (Unity in diversity - in nature) पर जोर दिया है।

(III) शुद्ध भूगोल अस्वीकार्य – रिटर ने गट्टरेर तथा होम्मेयर (Gatterer & Hommayer) की शुद्ध भूगोल (Pure geography) को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया और जयूने (Zeune) से मिलते जुलते विचार व्यक्त किये। रिटर के अनुसार किसी क्षेत्र की स्थिति, भौतिक लक्षणों, जलवायु तथा प्राकृतिक साधनों के सहसंबंध से ही उस क्षेत्र के भौगोलिक व्यक्तित्व को समझा जा सकता है।

(IV) समस्त स्थल का सजीव चित्रण – रिटर ने अपने उद्देश्य की व्याख्या करते हुए बताया कि उसका उद्देश्य "समस्त स्थल का सजीव चित्रण प्रस्तुत करना है। भूगोल एक प्रत्यक्ष, अनुभवात्मक, तथा विवरणात्मक विज्ञान है। वास्तव में भूगोल में किसी क्षेत्र के अध्ययन के लिए प्रत्यक्ष निरीक्षण होना चाहिए। अध्ययन क्षेत्र में जाने के बाद ही परिकल्पना की रचना करनी चाहिए, न कि पहले से ही।"

(V) क्षैतिज एकता – रिटर ने कुछ क्षेत्रों की क्षैतिज एकता पर बल दिया और विभिन्न महाद्वीपों की एकता पर भी ध्यान दिया। उसका उद्देश्य समस्त स्थल का सजीव चित्रण करना तथा क्षेत्रीय संबंध के सिद्धान्त को संगठित करना था।

(VI) मानव केन्द्रित भूगोल – (Man Centred - Anthropocentric geography) रिटर ने मानव के अध्ययन को अपनी रचनाओं का केन्द्र बिन्दु बनाया। उसके भूगोल का उद्देश्य मानवीय दृष्टिकोण से भूतल का अध्ययन करना था जिसमें मानव तथा प्रकृति के बीच में संबंध को समझा जा सके।

(VII) क्षेत्रीय अथवा प्रादेशिक भूगोल – रिटर प्रादेशिक भूगोल के संस्थापकों में से एक था। 'रिटर को प्रादेशिक भूगोल का जनक कहा जाता है। प्रादेशिक अध्ययन के लिए रिटर ने Lander Kunde एवं अल्जमीनी एर्डकुण्डे (Allgemeine Erdkunde) शब्दों का प्रयोग किया। Lander Kunde में उसने विशिष्ट क्षेत्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया तथा अल्जमीनी एर्डकुण्डे में सामान्य क्षेत्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया। रिटर ने प्रादेशिक भूगोल के अध्ययन में महाद्वीपों को आधार माना। रिटर की 'क्षेत्रीकता में एकता' की खोज ने भूगोल में क्षेत्रीय उपागम को प्रोत्साहित किया। क्षेत्रीय भूगोल का विकास करने की उसकी महत्वाकांक्षा ने बड़े प्रदेशों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

VIII) पृथ्वी एक जैविक इकाई के रूप में -(Earth As An Organic Unit)

रिटर ने पृथ्वी को जैविक समष्टि (Organic Whole) के रूप में देखा। पृथ्वी और उसके सभी अंग जैविक इकाई हैं। पृथ्वी का प्रत्येक तत्व ऊर्जा का संचरण करता है, वह जीवन के संचार में किसी न किसी प्रकार से सहयोग दे रहा है।

(IX) निश्चयवादी चिंतन -(Deterministic)- रिटर निश्चयवादी चिंतक था, उसका मानना था कि भौगोलिक विविधता के द्वारा ही ऐतिहासिक विविधता उत्पन्न होती है। उसने हम्बोल्ट की भाँति जलवायु का मानव पर प्रभाव को सर्वोपरि माना। यूरोप को श्वेत, एशिया को पीत, अफ्रीका को काला व अमेरिका को लाल रंग की त्वचा के निवासियों का स्थान माना।

(X) पार्थिव तत्वों की एकता (Unity in Terrestrial Elements)- पृथ्वी के तल पर पाये जाने वाले सभी तत्व परस्पर एक दूसरे से इस प्रकार सम्बन्धित हैं कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। इन सभी तत्वों में विविधता होते हुए भी एकता (Unity in diversity) है। यह तत्व परस्पर स्वयं भी क्रियाशील रहते हैं तथा दूसरे तत्वों को भी गतिशील बनाए रखते हैं। प्रत्येक तत्व का अस्तित्व एक दूसरे से जुड़ा होता है। इस प्रकार पृथ्वी तल पर विभिन्न तत्व आबद्ध हैं। कहीं कुछ तत्वों की सम्बद्धता है तो कहीं अन्य तत्वों की। इसी भावना को रिटर ने पार्थिव एकता का नाम दिया है।

(XI) "ईश्वर उद्देश्यवादी विचार धारा" => (Teleological Views) - रिटर ईश्वर के अस्तित्व को मानता था और उसकी मान्यता थी कि ईश्वर ने पृथ्वी की रचना उद्देश्य पूर्वक की थी। ईश्वर के द्वारा प्रत्येक महाद्वीप या प्रदेश को वह आकृति तथा स्थिति प्रदान की गयी है जो उसमें निवास करने वाली मानव जाति के विकास में अपनी निश्चित भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार वह उद्देश्यवादी तथा ईश्वर में प्रबल विश्वास करने वाला था।

रिटर के अध्ययन तथा वर्णन की विधियाँ => रिटर के भौगोलिक अध्ययन की पद्धति को निगमनात्मक पद्धति (Deductive Method) कहा जा सकता है। रिटर ने भौगोलिक अध्ययन के लिए निम्नलिखित विधियों को अपनाया —

1. आनुभविक विधि (Empirical Method) - भूगोल को आनुभविक विज्ञान मानते हुए उसने भूगोल के अध्ययन के लिए आनुभविक विधि अपनायी।
2. तुलनात्मक विधि - (Comparative Method) घटनाओं के कारण संबंधों को (Causal relationship) को स्पष्ट करने के लिए तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया। इसी कारण उसने अपनी ग्रन्थमाला 'अर्डकुंडे' का उपशीर्षक "सामान्य तुलनात्मक भूगोल - General Comparative Geography) रखा।
3. विश्लेषण एवं संश्लेषण विधि - (Analysis & Synthesis Method)
4. मानचित्रण विधि (Cartographical Method)